श्रृंखला – 3

शोधपरक् प्रगति विवरण –3

....

('साध्य – साधना' और पारेन्द्रिय विद्या)

'मेटाफिजिकल' क्रम में किसी भी 'भौतिक और आध्यात्मिक' 'साध्य / लक्ष्य' की 'साधना' के लिए 'पारेन्द्रिय विद्या' (टेलीपैथी) का उपयोग किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति (साधक / साधिका) जो 'ध्यान, त्राटक और टेलीपैथी' आदि में अभ्यस्थ हो; वह किसी भी 'साध्य / लक्ष्य' की साधना 'टेलीपैथी' के माध्यम से कर सकता है। यदि व्यक्ति 'कर्मकाण्डीय' क्रम में भी अपने मनोवांछित 'लक्ष्य / साध्य' की साधना एक निश्चित सीमा क्रम में पूर्ण कर चुका है तो भी उससे उत्पन्न 'आध्यात्मिक ऊर्जा' का उपयोग (प्रयोग) वह 'टेलीपैथी' के क्रम में कर सकता है। 'धार्मिक / आध्यात्मिक' 'साध्य / लक्ष्य' की साधना को 'कर्मकाण्डीय पद्धति' या 'पारेन्द्रिय विद्या पद्धति' या दोनों विधा की मिश्रित पद्धति के क्रम में व्यक्ति द्वारा साधना का चयन और उससे सम्बन्धित प्रक्रियाओं का आरम्भ करने से पूर्व उसे निम्न आवश्यक संकेतों से भिज्ञ होना चाहिए –

1. 'कर्मकाण्डीय' पद्धति – किसी भी कार्य का प्रमुख स्रोत उसका 'कारण' होता है। 'कारण' से सम्बन्धित कार्य को सम्पादित करने के लिए उससे सम्बद्ध एक अदद 'कार्य प्रणाली' होती है। लेकिन उसी क्रम में 'धार्मिक / आध्यात्मिक' 'साध्य या लक्ष्य' की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को उससे सम्बन्धित जिस 'कार्य प्रणाली' को अपनाता है उसे ' कर्मकाण्ड' कहा जा सकता है। इस क्रम में विविध 'साध्य या लक्ष्य' का 'कर्मकाण्ड' अलग – अलग हो सकता है। 'साध्य और साधना' के अतिरिक्त व्यावहारिक क्रम में किसी व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक के मध्य जो भी 'षोडश संस्कार' पण्डित या पुरोहित द्वारा सम्पन्न कराये जाते हैं उन सबका भी अपना – अपना 'कर्मकाण्ड' होता है। इसलिए यह कहना सर्वथा सार्थक है कि – 'मेटाफिजिकल' क्रम में किसी भी 'धार्मिक / आध्यात्मिक' प्रक्रिया के सम्पन्न होने में 'कर्मकाण्ड' आवश्यक है ।

'साधक / साधिका' के 'लक्ष्य / साध्य' से जुड़ा कोई भी धार्मिक 'अनुष्ठान / पुरश्चरण' तथा 'यज्ञ या महायज्ञ' आदि बिना यथोचित 'कर्मकाण्ड' के सम्पन्न नहीं हो सकता है। इस तथाकथित 'धार्मिक' क्रम में जो 'आध्यात्मिक ऊर्जा' उत्पन्न होती है उसका यथोचित संवाहन या आध्यात्मिक प्रसारण विविध तन्त्रों के माध्यम से ही हो सकता है। इसके साथ – साथ सारी आध्यात्मिकता की गतिशीलता जो विविध मानव के मध्य से समन्वय स्थापित करती हुई किसी न किसी रूप में ईश्वरीय तत्वों के व्यापक समूहों से जुड़ती या उससे जुड़ने के उपरान्त विविध तरंगों के माध्यम से कोई न कोई व्यापक 'रचना' का क्रम उत्पन्न करती है उन सबमें किसी न किसी रूप में एक ऐसा वायावी मार्ग बन जाता है जो विविध क्रम में 'ध्यान और त्राटक' से समन्वय स्थापित करते हुए 'टेलीपैथी' जैसे उपक्रम का

कोई न कोई मार्ग प्रशस्त करता है। इसलिए यह कहना कि ' ध्यान' या 'पारेन्द्रिय विद्या' की खोज या उन सबका आरम्भ वर्तमान या कुछ विगत वर्षों की उपलब्धि है – किसी भी तरह से न्यायोचित या तर्कसंगत नहीं है।

2. 'पारेन्द्रिय विद्या' पद्धति – 'प्रकृति' और 'ईश्वरीय तत्व' के व्यापक और अन्तहीन समूहों से नई स्रष्टि का क्रमिक निर्माण होता है। इन दोनों के मध्य 'सेतुबन्ध' निर्मित कर दोनों बिन्दुओं (साधक/साधिका और ईश्वरीय तत्वों का समूह) के मध्य संवाहक और वायावी सम्पर्क का माध्यम किसी न किसी रूप में 'पारेन्द्रिय विद्या' एक उच्च स्थिति में स्वतः कार्य करने लगती है।

यदि 'साधक/साधिका' 'ध्यान, त्राटक और पारेन्द्रिय विद्या' में अभ्यस्त नहीं है तो वह 'कर्मकाण्डीय' क्रम में 'साधना' के अन्तर्गत जो भी 'आध्यात्मिक ऊर्जा' अपने 'अन्तः बाह्य' में अर्जित करता है उसका समुचित उपयोग किसी भी रचना/संरचना के क्रम में नहीं हो पाता है। इसलिए किसी भी 'साध्य/लक्ष्य' के सापेक्ष में 'कर्मकाण्डीय' क्रम में भी 'साधना' करने वाले व्यक्ति को चाहिए कि वह साधना के क्रम में त्रयी 'ध्यान, त्राटक और पारेन्द्रिय विद्या' क्रियाओं का भी निरंतर अभ्यास करता रहे।

'तान्त्रिकता/आध्यात्मिकता' से जुड़ने या उन विधाओं में कार्यरत व्यक्ति को चाहिए कि वह दैनिक क्रम में कम से कम दो/तीन बार 'टेलीपैथी' का अभ्यास अवश्य कर ले। क्योंकि किसी विद्या या प्रक्रिया को जानना और उसमें अभ्यासरत् होना – दोनों में उसी तरह अन्तर है जिस तरह कोई व्यक्ति वाहन चलाता है और कोई उसके सम्बन्ध में केवल जानकारी रखता है। इस व्यापक क्षेत्र में विद्वता रखने के साथ – साथ क्रमिक अभ्यास की भी नितांत आवश्यकता है।

यह सच है कि – किसी भी 'साधक/साधिका' के लिए 'साध्य/लक्ष्य' के सापेक्ष में 'साधना' की पूर्णता के क्रम में 'टेलीपैथी' का मार्ग सहयोगी हो सकता है लेकिन उसके साधना के क्रम में कतिपय अंशों पर 'कर्मकाण्डीय' क्रम अपनाना सरल होगा। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वह 'टेलीपैथी' का समुचित विस्तार न करे। क्योंकि 'टेलीपैथी' के माध्यम से ही वह 'साध्य' के सापेक्ष में साधना द्वारा अर्जित 'आध्यात्मिक ऊर्जा' का समुचित उपयोग कर पायेगा।

उपरोक्त क्रम में किसी भी 'साधक/साधिका' को यह जानना ज्यादा आवश्यक है कि – 'साध्य/लक्ष्य' के सापेक्ष में 'साधना' के व्यापक क्रम में किन –किन स्थलों पर 'टेलीपैथी' का समावेश सरल नहीं है । ऐसे स्थलों पर जहां 'आध्यात्मिक ऊर्जा' विशेष प्रभावित न होती हो वहां वह सरलता का ध्यान रखते हुए 'कर्मकाण्डीय' क्रम/ परंपरा का उपयोग एक सार्थक सीमा और अवधि तक कर सकता है।

3. 'कर्मकाण्डीय' और 'पारेन्द्रिय विद्या' पद्धति – त्रयी साध्य (वैष्णव, शाक्त और शैव) सम्बन्धी साधना के कमिक क्रम में 'कर्मकाण्डीय' और 'टेलीपैथी' पद्धति – दोनों का उपयोग, व्यक्ति

नियमित क्रम में कर सकता है। सामान्यतः किसी भी 'साध्य मन्त्र' की साधना में 'साधक/साधिका' को निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना पड़ता है –

1.ऋषि – 'परा/अपरा' क्रम में 'ऋषि' मन्त्र का स्रष्टा होता है। धार्मिक / आध्यात्मिक अवधारणा के अनुसार जिस व्यक्ति ने सबसे पहले भगवान शिव के मुख से मन्त्र सुनकर उसे विधिवत् सिद्ध किया था, वह उस मन्त्र का स्रष्टा कहलाता है।

उपरोक्त क्रम में 'टेलीपैथी' उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

2. छन्द– किसी भी मन्त्र को सर्वतोभावेन आच्छादित करने की विधि को छन्द कहते हैं। अक्षर/पदों से छन्द बनता है। इसलिए इसका उच्चारण मुख से होता है।

उपरोक्त क्रम में 'कर्मकाण्डीय' विधि विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

3. देवता – समस्त जीवों के सभी क्रियाकलापों को प्रेरित – संचालित और नियंत्रित करने वाली प्राणशक्ति को 'देवता' कहते हैं। वह शक्ति व्यक्ति के हृदय में स्थित होती है।

उपरोक्त क्रम में 'टेलीपैथी' उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

4. बीज– मन्त्र शक्ति को उद्‌भावित करने वाला तत्व 'बीज' कहलाता है। बीज का स्रोत – आधार गुप्तांग होता है।

उपरोक्त क्रम में 'टेलीपैथी' / 'कर्मकाण्डीय' विधि – दोनों उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

5. शक्ति– जिसके सहयोग – प्रभाव से बीजमन्त्र बनता है, उसे तत्व शक्ति कहते हैं। इसका आधार पाद होता है।

उपरोक्त क्रम में 'टेलीपैथी' उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

6.विनियोग – मन्त्र को प्रतिफल की दिशा की ओर प्रेरित करना या निर्देशित करना विनियोग कहलाता है। 'ऋषि और छंद' का ज्ञान न होने पर 'मन्त्र' का समुचित फल नहीं मिलता है। पूर्व तान्त्रिक ग्रंथों के अनुसार 'विनियोग' की अभिव्यक्ति निम्न क्रम में की जा सकती है –

''ऋषि, छन्द और देवता' के समन्वयात्मक अभिव्यक्ति को उस साध्यपरक्'मन्त्र' का विनियोग कहा जा सकता है।'

'विनियोग' के क्रम में 'टेलीपैथी' का उपयोग आवश्यक नहीं है।

7. न्यास – 'साधक/साधिका' द्वारा भिन्न – भिन्न देवताओं का ध्यान करते हुए शरीर के भिन्न – भिन्न अंगों का इस प्रकार स्पर्श करना, मानों उन अंगों में देवता स्थापित किए जा रहे हों; सामान्यतः 'न्यास' कहलाता है।

'ऋषि, छन्द, देवता, बीज और शक्ति' आदि का न्यास, 'व्यक्ति' को 'मस्तक, मुख, हृदय, गुप्तांग और पाद' आदि स्थान में क्रमिक रूप से विधिवत करना चाहिए।'

'न्यास' के क्रम में कर्मकाण्डीय' और 'टेलीपैथी' पद्धति – दोनों का उपयोग किया जा सकता है। लेकिन 'टेलीपैथी' पद्धति से न्यास करने वाला व्यक्ति अपने 'तान्त्रिक/आध्यात्मिक' 'साध्य/लक्ष्य' को सशक्त क्रम में सरलता से पूर्ण कर सकता है।

8.ध्यान – 'ध्यान क्रम' में ध्यान का भाव प्रधान होता है। 'ब्रह्म' और 'कार्यब्रह्म' – दोनों भावमय होते हैं। मन और वाणी में अगोचर कारण 'ब्रह्म' केवल भावमय होता है। इसे निम्न क्रम में व्यक्त किया जा सकता है –

''मन्त्र' का शब्द से सम्बन्ध होता है। शब्द का अर्थ, अर्थ भाव और भावरूप से समबन्ध होता है। इसलिए प्रत्येक 'मन्त्र' का एक विशेष अर्थ , भाव और रूप होने के कारण, उसका ध्यान भी विशिष्ट होता है । यही कारण है कि भिन्न – भिन्न 'साध्य मन्त्र' का ध्यान पृथक – पृथक होता है।

'ध्यान' के क्रम में कर्मकाण्डीय' और 'टेलीपैथी' पद्धति – दोनों का उपयोग किया जा सकता है। लेकिन ''टेलीपैथी' पद्धति से ध्यान करने वाला व्यक्ति अपने 'तान्त्रिक/आध्यात्मिक' 'साय/लक्ष्य' को सशक्त क्रम में सरलता से पूर्ण कर सकता है।

9. जप और हवन – 'मन्त्र' की बार – बार आवृत्ति को जप कह सकते हैं। मन्त्रों का जप निम्न तीन क्रम में किया जा सकता है –

9.1. मानसिक– मन्त्रार्थ की भावना में तन्मय होकर मन ही मन 'साधक/साधिका' द्वारा मन्त्र का उच्चारण करना मानसिक जप कहलाता है।

9.2. उपांशु – मन्त्रार्थ और देवता में मन लगाकर जिह्वा और ओष्ठ से कुछ कम्पित करते हुए केवल अपने को ही सुनाई पड़ने योग्य मन्त्र का उच्चारण 'उपांशु' जप कहलाता है।

9.3. वाचिक – मन्त्रार्थ और देवता का ध्यान करते हुए वाणी द्वारा मन्त्रोच्चारण करना 'वाचिक' जप कहलाता है।

उपरोक्त क्रम में 'टेलीपैथी' उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

10. हवन – जप के बिना मन्त्र साध्य नहीं हो पाता है। जप के उपरान्त उसका दशांश हवन आवश्यक है। क्योंकि हवन के बिना, वह साध्य मन्त्र सार्थक प्रतिफल नहीं देता है। अभीष्ट फल हेतु 'साधक/साधिका' को श्रद्धा पूर्वक हवन करना चाहिए। काम्य और निष्काम – दोनों प्रकार के साधना में हवन करना आवश्यक है। अग्नि, समिधा, कुण्ड, दिशा और हवन द्रव्यों आदि का उपयोग साध्य मन्त्रों के अनुकूल 'व्यक्ति' को करना चाहिए।

उपरोक्त क्रम में 'टेलीपैथी' और 'कर्मकाण्डीय क्रम' – दोनों का उपयोग सहयोगी सिद्ध हो सकता है।

11. पीठपूजा – पूर्व 'टेलीपैथी' और 'कर्मकाण्डीय क्रम' को पूर्ण करने और न्यास आदि से निवृत्त होने के उपरान्त, ' साधक/साधिका ' को पीठ शक्तियों का साध्य मन्त्रों के अनुसार विधिवत पूजन करना चाहिए । यह पूजन यन्त्रवत् होना चाहिए।

उपरोक्त क्रम में 'टेलीपैथी' और 'कर्मकाण्डीय क्रम' – दोनों का उपयोग सहयोगी सिद्ध हो सकता है।

12. आवरण पूजा – आवरण पूजा के उपरान्त ही 'साधक/साधिका' साध्य मन्त्रों का उपयोग, काम्य प्रयोगों में कर सकता है। यह क्रम भी साध्य मन्त्रों के अनुसार होगा।

उपरोक्त क्रम में 'टेलीपैथी' और 'कर्मकाण्डीय क्रम' – दोनों का उपयोग सहयोगी सिद्ध हो सकता है।

13. तान्त्रिक/आध्यात्मिक उपयोग/प्रयोग – किसी भी 'साध्य मन्त्र' को उपरोक्त प्रक्रिया (1–12) के अन्तर्गत, जब कोई 'साधक/साधिका' पूर्ण कर लेता है तो साधनाक्रम के उपरान्त, उत्पन्न 'आध्यात्मिक ऊर्जा' उससे क्रमिक क्रम में जुड़ने लगती है। उस 'आध्यात्मिक ऊर्जा' का उपयोग, जब वह 'काम्य' साधना के क्रम में करने का प्रयास करता है तो उसे विविध तान्त्रिक क्रमों से जुड़ना पड़ता हैं। वहीं जब वह उस 'आध्यात्मिक ऊर्जा' को 'निष्काम' साधना के क्रम में स्वतः से जोड़ना चाहता है तो उसे अधिकांशतः 'पारेन्द्रिय विद्या' का सहयोग लेना पड़ता है।

सामान्य क्रम में 'आध्यात्मिक ऊर्जा' का उपयोग / प्रयोग – दोनों का क्रम 'काम्य' और 'निष्काम' प्रक्रिया में संयोजन और विसर्जन से 'पारेन्द्रिय क्रम' में सम्पन्न होता है। इन दोनो 'काम्य' और 'निष्काम' क्रम में 'आध्यात्मिक ऊर्जा' का विविध आयाम 'कर्मकाण्डीय' क्रम में एक सीमा तक ही सार्थक हो पाता है । लेकिन उसी जगह 'पारेन्द्रिय क्रम' की कोई निश्चित सीमा नहीं होती है। इसका 'प्रसार/संकुचन' कभी कभी असीमित हो जाता है। यह सब 'साधक/साधिका' की साधना 'पारेन्द्रिय क्रम' और दृढ़ आत्मविश्वास पर निर्भर करता है।

यदि 'साधक/साधिका' को 'कर्मकाण्डीय क्रम' के साथ – साथ 'पारेन्द्रिय क्रम' का समुचित ज्ञान और अभ्यास नहीं है तो वह साध्यमन्त्रों की साधना के उपरान्त प्राप्त 'आध्यात्मिक ऊर्जा' का न तो समुचित 'उपयोग/प्रयोग' कर पायेगा और न ही उसे सुरक्षित क्रम में संग्रहित कर पायेगा।

उपरोक्त सार्थक संक्षिप्त विवेचना के उपरान्त, यह आवश्यक हो जाता है कि

साध्यमन्त्रों की साधना प्रक्रिया को 'पारेन्द्रिय क्रम' में समुचित ढंग क्रम से प्रस्तुत किया जाय। हां, 'पारेन्द्रिय क्रम' की क्लिष्टता को ध्यान में रखते हुए कतिपय स्थलों पर 'कर्मकाण्डीय क्रम' का उपयोग ' साधक/साधिका ' तब तक कर सकता है जब तक वह 'पारेन्द्रिय विद्या' के आवश्यक क्रमों में पूर्णतः अभ्यस्थ न हो जाये।

साध्य मन्त्रों के त्र्यी क्रम (वैष्णव, शाक्त और शैव) में 'साधक/साधिका' को चाहिए कि उसमें प्रयुक्त 'देवी/देवता' या 'शक्ति' का वह 'पुरश्चरण/अनुष्ठान' या दैनिक क्रम में 'टेलीपैथी' के माध्यम से यथासम्भव सम्पर्क करने का प्रयास करे। इसके अतिरिक्त साधना प्रक्रिया में वह 'कर्मकाण्डीय' क्रम को ग्राह्यता की दृष्टि से अपना सकता है। लेकिन 'पुरश्चरण/अनुष्ठान' के उपरान्त उससे उत्सर्जित 'आध्यात्मिक ऊर्जा' के उपयोग/प्रयोग में उसे निरंतर 'टेलीपैथी' से जुड़ने का प्रयास करना चाहिए। यदि वह ऐसा करने में सक्षम नहीं हो पाता है तो 'आध्यात्मिक ऊर्जा' का 'संरक्षण' या 'संवाहन' उसके लिए अत्यन्त कठिन होगा।

त्र्यी क्रम (वैष्णव, शाक्त और शैव) से जुड़े कुछ आवश्यक 'साध्य मन्त्र' का उल्लेख यहां किया जा रहा है। इस क्रम में वह 'साध्य मन्त्र' से जुड़े उन बिन्दुओं पर 'टेलीपैथी' का प्रयोग कर सकता है जो उसके साधना प्रक्रिया और उपयोगिता में सहायक सिद्ध हो। इसका क्रमिक क्रम निम्न हो सकता है –

1.वैष्णव मार्ग सम्बन्धी साध्य मन्त्र– वैष्णव मार्गीय साध्य मन्त्रों को संक्षिप्त मन्त्रार्थ के साथ निम्न क्रम में प्रस्तुत किया जा सकता है –

1.1.साध्य मन्त्र – क्लीं ऋषीकेशाय नमः

(विशेष –1ः यह भगवान विष्णु का आठ अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – नारद, छन्द – गायत्री और देवता – त्रैलोक्यमोहन हैं।

विशेष –2ः साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – नारद और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – त्रैलोक्यमोहन से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

1.2. साध्य मन्त्र – ऊँ नमो नारायणाय।

(विशेष –1ः यह भगवान विष्णु का आठ अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – प्रजापति, छन्द – गायत्री और देवता – भग0 लक्ष्मी हरि हैं।

विशेष –2ः साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – प्रजापति और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 लक्ष्मी हरि से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

1.3.साध्य मन्त्र – ह्रीं क्ष्रौं ह्रीं / ऊँ क्ष्रौं ऊँ ।

(विशेष –1: यह भगवान विष्णु के चौथे अवतार भगवान नृसिंह का तीन अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – अत्रि, छन्द – गायत्री और देवता – श्री नृसिंह हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – अत्रि और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – श्री नृसिंह से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

1.4.साध्य मन्त्र– ऊँ श्रीं ह्रीं जयलक्ष्मी प्रियाय नित्य प्रमुदित चेतसे लक्ष्मी श्रितार्द्ध देहाय श्रीं ह्रीं नमः।

(विशेष –1: यह भगवान विष्णु के चौथे अवतार भगवान नृसिंह का तीस अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – पद्मभव, छन्द – अतिजगती, बीज – श्रीं, शक्ति – ह्रीं और देवता – श्री लक्ष्मीनृसिंह हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – पद्मभव और छन्द – अतिजगती का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – श्री लक्ष्मीनृसिंह से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

1.5.साध्य मन्त्र – क्लीं गोपीजन – बल्लभाय स्वाहा।

(विशेष –1: यह भगवान विष्णु के आठवें अवतार भगवान कृष्ण का ग्यारह अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – नारद, छन्द – विराट, बीज – क्लीं, शक्ति – स्वाहा और देवता – श्री कृष्ण हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – नारद और छन्द – विराट का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – श्री कृष्ण से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

1.6.साध्य मन्त्र – ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन बल्लभाय स्वाहा।

(विशेष –1: यह भगवान विष्णु के आठवें अवतार भगवान कृष्ण का बीस अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – विधात्रानन्द भैरव, छन्द – गायत्री, बीज – क्लीं, शक्ति – स्वाहा और देवता – श्री गोपाल सुन्दरी हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – विधात्रानन्द भैरव और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – श्री गोपालसुन्दरी से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

1.7.साध्य मन्त्र – ऊँ नमो भगवते रुक्मिणीवल्लभाय स्वाहा।

(विशेष –1: यह भगवान विष्णु के आठवें अवतार भगवान कृष्ण का सोलह अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – नारद, छन्द – अनुष्टुप, और देवता – रुक्मिणीवल्लभ हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – नारद और छन्द – अनुष्टुप का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – रुक्मिणीवल्लभ से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

1.8.साध्य मन्त्र – क्लीं गोवल्लभाय स्वाहा।

(विशेष –1: यह भगवान विष्णु के आठवें अवतार भगवान कृष्ण का आठ अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – ब्रह्मा, छन्द – गायत्री, और देवता – श्री कृष्ण हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – ब्रह्मा और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – श्री कृष्ण से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

1.9.साध्य मन्त्र – क्लीं कृष्ण क्लीं।

(विशेष –1: यह भगवान विष्णु के आठवें अवतार भगवान कृष्ण का चार अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – नारद, छन्द – गायत्री, और देवता – श्री कृष्ण हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – नारद और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – श्री कृष्ण से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.शाक्त मार्ग सम्बन्धी साध्य मन्त्र– शाक्त मार्गीय साध्य मन्त्रों को संक्षिप्त मन्त्रार्थ के साथ निम्न क्रम में प्रस्तुत किया जा सकता है –

2.1.साध्य मन्त्र – ऊँ ह्रीं दुं दुर्गाय नमः।

(विशेष –1: यह भगवती दुर्गा का आठ अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – नारद, छन्द – गायत्री, और देवता – भगवती दुर्गा हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – नारद और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भगवती दुर्गा से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.2.साध्य मन्त्र – ऊँ ह्रीं महिष मर्दिनि स्वाहा।

(विशेष –1: यह भगवती दुर्गा का दस अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – नारद, छन्द – गायत्री, और देवता – भगवती महिष मर्दिनि हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – नारद और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भगवती महिष मर्दिनि से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.3.साध्य मन्त्र – ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्ट ग्रह हुं फट् स्वाहा।

(विशेष –1ः यह भगवती दुर्गा का पन्द्रह अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – तपस, छन्द – ककुप, और देवता – भग0 शूलिनि हैं।

विशेष –2ः साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – तपस और छन्द – ककुप का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 शूलिनि से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.4.साध्य मन्त्र – ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। (नवार्ण मन्त्र)।

(विशेष –1ः यह भगवती दुर्गा का 9 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – ब्रह्मविष्णुरुद्र, छन्द – गायत्र्युष्णिगनुष्टुप और देवता – श्री महाकाली महासरस्वती महालक्ष्मी हैं।

विशेष –2ः साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – ब्रह्मविष्णुरुद्र और छन्द – गायत्र्युष्णिगनुष्टुप का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – श्री महाकाली महासरस्वती महालक्ष्मी से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.5. साध्य मन्त्र – क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

(विशेष –1ः यह भगवती काली का 22 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – भैरव, छन्द – उष्णिक, बीज –ह्रीं, शक्ति – हूं, कीलक – क्रीं और देवता – भगवती काली हैं।

विशेष –2ः साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – भैरव और छन्द – उष्णिक का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भगवती काली से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.6. साध्य मन्त्र – उच्छिष्ट चांडालिनि सुमुखिदेवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः।

(विशेष –1ः यह भगवती काली का 22 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – भैरव, छन्द – गायत्री, और देवता – सुमुखी हैं।

विशेष –2ः साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – भैरव और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – सुमुखी से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.7. साध्य मन्त्र – ऊँ ह्रीं त्रीं हुं फट्। (भग0 तारा)। / ह्रीं त्रीं हुं फट्। (भग0 एकजटा)। / ह्रीं त्रीं हुम्। (भग0 नील सरस्वती)

(विशेष –1: यह भगवती तारा का 5/4/3 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – अक्षोम्य, छन्द – बृहती, बीज –ह्रीं, शक्ति – हुं, कीलक – स्त्रीं और देवता – भगवती तारा हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – अक्षोम्य और छन्द – बृहती का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भगवती तारा से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.8. साध्य मन्त्र – ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं नीलतारे सरस्वति द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः सौः ह्रीं स्वाहा।

(विशेष –1: यह भगवती तारा का 32 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – ब्रह्मा, छन्द – अनुष्टुप और देवता – भगवती सरस्वती हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – ब्रह्मा और छन्द – अनुष्टुप का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भगवती सरस्वती से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.9. साध्य मन्त्र – ऐं क्लीं सौः।

(विशेष –1: यह भगवती षोडशी का तीन अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – दक्षिणामूर्ति, छन्द – पंक्ति, बीज – सौः, शक्ति – क्लीं और देवता –भग0 त्रिपुरा बाला हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – दक्षिणामूर्ति और छन्द – पंक्ति का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0त्रिपुराबाला से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.10. साध्य मन्त्र – ऐं ह्रीं श्रीं।

(विशेष –1: यह भगवती भुवनेश्वरी का तीन अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि– शक्ति, छन्द – गायत्री, बीज – हकार, शक्ति – ईकार, कीलक – रेफ और देवता – **भग0 भुवनेश्वरी हैं।**

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – शक्ति और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 भुवनेश्वरी से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.11. साध्य मन्त्र – ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः।

(विशेष –1: यह भगवती भैरवी का तीन अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि– दक्षिणामूर्ति, छन्द – पंक्ति, बीज – ऐं, शक्ति – सौः, कीलक – क्लीं और देवता – भग0 भैरवी हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – दक्षिणामूर्ति और छन्द – पंक्ति का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 भैरवी से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.12. साध्य मन्त्र – ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।

(विशेष –1: यह भगवती भैरवी का 20 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – दुहिण, छन्द – कृति, और देवता – अन्नपूर्णा हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – दुहिण और छन्द – कृति का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – अन्नपूर्णा से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.13. साध्य मन्त्र – ऊँ श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

(विशेष –1: यह भगवती छिन्नमस्ता का 17 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि– भैरव, छन्द – सम्राट, बीज – हूं हूं, शक्ति – स्वाहा और देवता – भगवती छिन्नमस्ता हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – भैरव और छन्द – सम्राट का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भगवती छिन्नमस्ता से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.14. साध्य मन्त्र – ऊँ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं।

(विशेष –1: यह भगवती रेणूका का 5 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – भैरव, छन्द – पंक्ति, और देवता – रेणूका शबरी हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – भैरव और छन्द – पंक्ति का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – रेणूका शबरी से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.15. साध्य मन्त्र – ऊँ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वांकीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ऊँ स्वाहा।

(विशेष –1: यह भगवती बगलामुखी का 36 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – नारद, छन्द – बृहती, और देवता – भगवती बगलामुखी हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – नारद और छन्द – बृहती का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भगवती बगलामुखी से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.16. साध्य मन्त्र – ऊँ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा।

(विशेष –1: यह भगवती वाराही का 15 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – ईश्वर, छन्द – जगती, बीज – ऊँ , शक्ति – ह्रीं, कीलक – ठः ठः और देवता – भगवती स्वप्नवाराही हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि –ईश्वर और छन्द – जगती का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भगवती स्वप्नवाराही से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.17. साध्य मन्त्र – ऊँ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्ट चाण्डालि श्री मातंगेश्वरि सर्वजन वशंकरि स्वाहा।

(विशेष –1: यह भग0 मातंगी का 32 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – मतंग, छन्द – अनुष्टुप, और देवता – भग0 मातंगी हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – मतंग और छन्द – अनुष्टुप का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 मातंगी से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.18. साध्य मन्त्र – ऐं ह्रीं श्रीं आद्यलक्ष्मि स्वयंमुखे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।

(विशेष –1: यह भगवती कमला का 17 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – ब्रह्मा, छन्द – अष्टि, बीज– ह्रीं, शक्ति – श्रीं और देवता – भगवती ज्येष्ठालक्ष्मी हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – ब्रह्मा और छन्द – अष्टि का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भगवती ज्येष्ठालक्ष्मी से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

3.शैव मार्ग सम्बन्धी साध्य मन्त्र– शैव मार्गीय साध्य मन्त्रों को संक्षिप्त मन्त्रार्थ के साथ निम्न क्रम में प्रस्तुत किया जा सकता है –

3.1. साध्य मन्त्र – ऊँ जूं सः।

(विशेष –1: यह शैव परम्परा का तीन अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – कहोल, छन्द – गायत्री और देवता – भग0 मृत्युंजय महादेव हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – कहोल और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 मृत्युंजय महादेव से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

3.2. साध्य मन्त्र – नमः शिवाय।

(विशेष –1: यह शैव परम्परा का 5 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – वामदेव, छन्द – पंक्ति, और देवता – भग0 ईशान हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – वामदेव और छन्द – पंक्ति का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 ईशान से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

3.3. साध्य मन्त्र – ऊँ नमः शिवाय।

(विशेष –1: यह शैव परम्परा का 6 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – वामदेव, छन्द – पंक्ति, और देवता – भग0 सदाशिव हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – वामदेव और छन्द – पंक्ति का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 सदाशिव से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

3.4. साध्य मन्त्र – ह्रीं नमः शिवाय ह्रीं।

(विशेष –1: यह शैव परम्परा का 7 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – वामदेव, छन्द – पंक्ति और देवता – भग0 उमापति हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – वामदेव और छन्द – पंक्ति का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 उमापति से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

3.5. साध्य मन्त्र – ऊँ ह्रीं ग्लौं नमः शिवाय।

(विशेष –1: यह शैव परम्परा का 8 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – वामदेव, छन्द – पंक्ति और देवता – भग0 सदाशिव हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – वामदेव और छन्द – पंक्ति का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 सदाशिव से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.6. साध्य मन्त्र – ऊँ श्रीं नमः शिवाय ऊँ श्रीं।

(विशेष –1: यह शैव परम्परा का 9 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि –शुक्र, छन्द – विराट और देवता – भग0 दक्षिणामूर्ति रुद्र हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – शुक्र और छन्द – विराट का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 दक्षिणामूर्ति रुद्र से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.7. साध्य मन्त्र – ऊँ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रयच्छ स्वाहा।

(विशेष –1: यह शैव परम्परा का 22 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – चर्तुमुख, छन्द – गायत्री और देवता – भग0 दक्षिणामूर्ति हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – चर्तुमुख और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 दक्षिणामूर्ति से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.8. साध्य मन्त्र – ऊँ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा।

(विशेष –1: यह शैव परम्परा का 24 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – ब्रह्मा, छन्द – गायत्री, बीज – मेधा, शक्ति – स्वाहा और देवता – भग0 दक्षिणामूर्ति हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – ब्रह्मा और छन्द – गायत्री का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 दक्षिणामूर्ति से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.9. साध्य मन्त्र – ऊँ नमो भगवते सर्वज्ञ कण्ठं निं नीलं कण्ठाय अमलाय क्षिप क्षिप ऊँ स्वाहा।

(विशेष –1: यह शैव परम्परा का 29 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – विमल , छन्द – कृति , बीज – वीं, शक्ति – स्वाहा और देवता – भग0 अमल नीलकंठ हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – विमल और छन्द – कृति का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 अमल नीलकंठ से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.10. साध्य मन्त्र – ऊँ ह्रीं दक्षिणामूर्तये तुभ्यं वटमूल निवासिने ध्यानैक निरतांगाय नमो रुद्राय शम्भवे ह्रीं ऊँ ।

(विशेष –1: यह शैव परम्परा का 36 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि –शुक्र, छन्द – अनुष्टुप , बीज – ऊँ, शक्ति – ह्रीं और देवता – भग0 दक्षिणामूर्ति शिव हैं।

विशेष –2: साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – शुक्र और छन्द – अनुष्टुप का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 दक्षिणामूर्ति शिव से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.11. साध्य मन्त्र – ऊँ भूर्भुवः स्वः हौं ऊँ जूं सः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ऊँ जूं सः हौं भूर्भुवःस्वरोम।

(विशेष –1ः यह शैव परम्परा का 52 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – वशिष्ठ, छन्द – अनुष्टुप , बीज – ऊँ, शक्ति – हौं और देवता – भग0 मृत्युंजय रुद्र हैं।

विशेष –2ः साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – वशिष्ठ और छन्द – अनुष्टुप का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 मृत्युंजय रुद्र से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

2.12. साध्य मन्त्र – ऊँ हौं ऊँ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं, उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात भूर्भुवः स्वः रों जूं सः हौं ऊँ ।

(विशेष –1ः यह शैव परम्परा का 52 अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र के ऋषि – वामदेव कहोल वशिष्ठ, छन्द – पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप , बीज – श्रीं, शक्ति – ह्रीं और देवता – भग0 सदाशिव महामृत्युंजय रुद्र हैं।

विशेष –2ः साधक/साधिका को चाहिए कि वह अपने साधनाक्रम में ऋषि – वामदेव कहोल वशिष्ठ और छन्द – पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप का ध्यान करने के उपरान्त, देवता – भग0 सदाशिव महामृत्युंजय रुद्र से 'टेलीपैथी' के क्रम में जुड़ने का प्रयास करे।)

उपरोक्त त्रयी महाशक्तियों (वैष्णव, शाक्त और शैव) से सम्बन्धित मन्त्रों में प्रमुख रूप से 'ऋषि, छन्द और देवता' आदि का उल्लेख हुआ है। इसमें 'मन्त्र' के 'ऋषि' से 'साधक/साधिका' 'ध्यान/त्राटक' द्वारा सम्पर्क स्थापित कर सकता है। 'ऋषि' मन्त्र का स्रष्टा होता है, इसलिए उससे सम्बन्धित 'देवता' का कोई न कोई सूत्र उसे अवश्य पता होगा। उस सूत्र तक पहुंचने के लिए उसे उसी क्रम में 'टेलीपैथी' के माध्यम से कोई न कोई ऐसा तारतम्य स्थापित करना होगा जिससे उस देवता के देवतत्वों के व्यापक समूह से उसका कोई न कोई तारतम्य निर्मित हो सके।

भौतिकता के तारतम्य में जब हम आध्यात्मिकता से जुड़ने का प्रयास करेंगे तो हमें कोई न कोई ऐसा मार्ग निर्मित करना पड़ेगा जो उसके लिए कोई न कोई ऐसा रस्ता प्रशस्त करता हो जो सुगमता और सरलता से गन्तव्य स्थल तक पहुंचा सके। – यह सब 'मेटाफिजिकल' क्रम में तत्सम्बन्धित विज्ञजन के लिए हर तरह से विचारणीय है।

किसी भी महाशक्ति से सम्बन्धित 'मन्त्र' – एक ऐसा सशक्त माध्यम होता है जो उससे सम्बन्धित देवता या 'देवांश' के व्यापक समूह से किसी व्यक्ति को आत्मसात कराने में सक्षम हो सकता है। क्योंकि ध्यानस्थ स्थिति में साधक को मन्त्र स्रष्टा ऋषि से सम्पर्क करने के लिए मन्त्र ही पूर्ण रूप से सहायक सिद्ध होगा। उसी क्रम में मन्त्र के देवता के व्यापक देवतत्व समूह से जुड़ने या सम्पर्क स्थापित करने के लिए साधक को 'टेलीपैथी' प्रक्रिया में मन्त्र का भी आपेक्षित सहयोग लेना पड़ सकता है।

उपरोक्त रचनात्मक और शोधात्मक वक्तव्य का सूक्ष्म से विराट तक का आशय यह है कि – मन्त्रों की क्रमिक आवृत्ति और उससे जुड़े अनुष्ठानों से उत्पन्न या प्रस्फुटित

'आध्यात्मिक ऊर्जा' से ही 'ध्यान, त्राटक और टेलीपैथी' का क्रमिक क्रम निरंतर जुड़ता – टूटता रहता है। इसी त्रयी क्रम का समुचित अभ्यास और प्रयास उसे मन्त्रों की आपेक्षित साध्यता के अन्तर्गत परम्परागत् देवांश के व्यापक समूह से आत्मसात् करा सकता है।

'साधक/साधिका' का देवांश के व्यापक समूह से जुड़ना या उसका आत्मसात करना ही लक्ष्य नहीं होना चाहिए। उसे चाहिए कि वह इस अत्यन्त सुखद प्रकरण को एक आध्यात्मिक पड़ाव मानकर 'टेलीपैथी' के माध्यम से अपनी वह आध्यात्मिक यात्रा आरम्भ करे जो किसी न किसी रूप में मानवीय मूल्यों या उसे जुड़े व्यापक मानवता का कोई न कोई उद्गम स्थल हो।

इस त्रयी चक्रीय क्रम में वह देवांश तत्व के व्यापक समूह से जुड़ते हुए पुनः मानवीय मूल्यों के साथ व्यापक मानवता से जुड़ने का प्रयास ही नहीं करेगा, बल्कि उसे सही रस्ता प्रशस्त करने का एक ऐसा आध्यात्मिक स्रोत बनेगा जो किसी न किसी रूप में 'मेटाफिजिकल' क्रम होगा।

इस व्यापक आध्यात्मिक पड़ाव पर अपने को स्थापित करके वह 'जन्म, मृत्यु और जन्म' के मूल तत्वों को समझते हुए अपने अन्तः बाह्य को वह आकार दे सकता है जो 'द्वैत और अद्वैत' की सीमाओं से निरंतर जुड़ता और टूटता है। कहने का तात्पर्य यह है कि – किसी भी व्यक्ति के जीवन का अन्तिम पड़ाव, 'सूक्ष्म – स्थूल' के संयोजन और विखंडन' के क्रमिक क्रम में कभी कभी नये जीवन का आरम्भिक स्रोत या उद्गम स्थल बन जाता है।

अन्त के बाद का आरम्भ सुखद और सर्वग्राह्य हो, इसके लिए उसे 'मेटाफिजिकल' क्रम में 'ध्यान, त्राटक और टेलीपैथी' के अन्तर्गत उन सब आध्यात्मिक प्रक्रियाओं से जुड़ना और टूटना होगा जो संवेदनशीलता के क्रम में निरंतर निर्णायक सिद्ध हो।

0